नईदुनिया

संपादकीय

खुशी मापने के वैश्विक चश्में पर सवाल

खुशी मापने के वैश्विक पैमाने को लेकर तमाम किंतु-परंतु रहे हैं लेकिन फिर भी भारत के नीति-नियंताओं को इस सवाल पर आत्ममंथन करना चाहिए कि भारत दुनिया के करीब 140 देशों में 126वें नंबर पर क्यों है। खुशी मापने के पश्चिमी चश्मे पर हमेशा से ही सवाल उठते रहे हैं, फिर भारत जैसे विशाल जनसंख्या व सांस्कृतिक विविधता वाले देश को एक पैमाने से मापना अतार्किक ही है। हो सकता है जिस बात पर अमेरिकी नागरिक खुश होते हों, वह एक आम भारतीय की खुशी की वजह न हो। सही मायनों में खुशी का आधार संतोष होता है। जो एक सापेक्ष स्थिति है। एक मन: स्थिति है। फिर भारत जैसे देश का दर्शन भौतिक संपदा के बजाय आंतरिक शांति और संतुष्टि में खुशी तलाशता रहा है। फकीरों की मौज को खुशी के पैमाने पर कदापि नहीं आंका जा सकता। वैसे पश्चिमी मापदंड के आधार पर कर्ज में डूबे व अराजकता से जूझते देश पाकिस्तान को भारत के मुकाबले ज्यादा खुशहाल बताने का तर्क गले से नहीं उतरता। इस बार की वर्ल्ड हैपीनेस रिपोर्ट में एक बार फिर सातवीं दफा फिनलैंड लगातार खुशहाल देश बना है। उसके बाद डेनमार्क व आइसलैंड का नंबर आता है। ये देश विकसित मगर भारत के एक छोटे शहर की जितनी आबादी वाले देश हैं। नि:संदेह, बड़ी जनसंख्या का हमारी नागरिक सेवाओं पर प्रतिकूल असर पड़ता ही है। भले ही हमारे नीति-नियंताओं की नीतियों में खोट रहे हों और भ्रष्टाचार व्यवस्था को लीलता रहा है, लेकिन हम कैसे भूलें कि देश सदियों की गुलामी से निकलकर अपने पैरों पर खड़ा हुआ है। भले ही देश में घनघोर आर्थिक असमानता हो, लेकिन फिर भी आज देश की आर्थिक विकास की दर दुनिया में सबसे ज्यादा है। जरूरी है कि आर्थिक विकास समतामूलक होना ही चाहिए। लेकिन यहां एक सवाल यह भी है कि क्या आर्थिक संपन्नता ही खुशी का आधार है अगर वाकई आधार है तो क्यों आम भारतीयों के सपनों का अमेरिका पहले दस खुश देशों की सूची से बाहर है क्यों कोई भी विकसित बड़ा राष्ट्र पहले दस खुश देशों में शामिल नहीं है।

बहरहाल, वैश्विक खुशी का सूचकांक हमारे नीति-नियंताओं को आत्ममंथन का मौका देता है। सत्ताधीशों को विचार करना होगा कि आखिर आम भारतीय कैसे खुश हो सकता है। देश में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं और बेहतर शिक्षा व्यवस्था कैसे स्थापित की जा सकती हैं। देश में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, जातीय भेदभाव, निरक्षरता और आर्थिक असमानता को दूर करने की गंभीर पहल तो होनी ही चाहिए। बेरोजगारी की समस्या को प्राथमिकता के आधार पर संबोधित करने की जरूरत है। महिलाओं को सशक्त बनाकर अर्थव्यवस्था में उनकी बड़ी भूमिका निर्धारित की जानी चाहिए। लोगों का देश की कानून व्यवस्था के प्रति भरोसा बने, ऐसी नीतियों को क्रियान्वित करने की जरूरत है। कोशिश होनी चाहिए कि देश में प्रति व्यक्ति आय बढ़े। सत्ताधीशों की विश्वसनीयता बने और संवैधानिक संस्थाओं को मजबूती प्रदान की जाए। यदि ऐसा होता है तो देश में खुशी के सूचकांक में सुधार संभव है। भारतीय सामाजिक तानेबाने की अपनी विशेषताएं रही हैं। उसे वैश्विक मंच पर मान्यता दिलाने की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि इस रिपोर्ट का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि भारतीय वृद्धों में जीवन के प्रति संतुष्टि का स्तर ऊंचा है। इसका आधार भारतीय जीवन मूल्यों की मजबूती भी है। जबकि पश्चिमी देशों में वृद्धों की बड़ी आबादी आज भी एकाकी जीवन के त्रास को झेल रही है। भारत में संयुक्त परिवारों में बिखराव के बावजूद बड़ी आबादी फिर भी अपने बुजुर्गों का ख्याल रखती है। दरअसल, मीडिया में प्रकाशित नकारात्मक समाचारों से आम लोगों में भारतीय पारिवारिक मूल्यों के प्रति भ्रामक धारणा बनती है। इसके बावजूद आम भारतीय के जीवन स्तर को सुधारने के लिये कई मोर्चों पर अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। देश में सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सद्भाव की दिशा में भी बहुत काम किये जाने की जरूरत है। जीवन की गुणवत्ता में धनात्मक बदलाव के लिये सरकारों, सामाजिक संगठनों व सामुदायिक संस्थाओं को रचनात्मक पहल करने की जरूरत है। यदि ऐसा होता है तो अगली बार खुशी के सूचकांक में उत्साहवर्धक परिणाम हो सकते हैं।

युवा आगे आएंगे तभी होगा राष्ट्र-समाज का कल्याण

दृष्टिकोण

-अरुण कुमार दीक्षित

भारत में पहली बार युवानीति सन् 1988 में संसद के दोनों सदनों में रखी गई। युवा मामलों और खेल विभाग को इसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सौंपी गई। उद्देश्य था कि युवा नीति उनके व्यक्तित्व व कार्य क्षमता को मजबूत बनाए। वर्ष 2003में फिर युवा राष्ट्रनीति पर चर्चा हुई। 2003 में 13 से 35 वर्ष के आयु के व्यक्ति को युवा के रूप में परिभाषित किया गया। वर्ष 2014 में भाजपा सरकार ने युवाओं के समग्र विकास की वचनबद्धता दोहराई।

राजनीति में युवाओं की अहम भूमिका है। युवा अपने विचारों से हर क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। वे जिस विचार की ओर अग्रसर होते हैं, समाज उससे प्रभावित होता ही है। आज दुनिया में सर्वाधिक मांग युवाओं की है। भारत की राजनीति में सबसे अधिक मांग युवा विचारों के साथ युवाओं की ही रहती है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को युवाओं ने ही धार दी थी। युवाओं के आकर्षण का केंद्र राजनीति है। वह राजनीति उन्हें आकर्षित करती है। भारत की राजनीति ने युवा मन को निराश किया है। राजनीति युवाओं में विराट लक्ष्य नहीं देखती। राजनीतिक दलों से जुड़े युवा कभी इस दल तो कभी उस दल के हाईकमान का जयघोष करते हैं। ऐसा कर वे एक तरह से अपने ही श्रम-समय का नुकसान करते हैं। युवा सपने देखते हैं और सफल होते हैं। विफल भी होते हैं। टूटते हैं। आज युवा बेरोजगारी से टकरा रहे हैं। युवाओं पर पढ़ाई के साथ परिवार वालों का भी दबाव होता है कि कुछ कर दिखाना है। अनेक युवा भारतीय राजनीति में आए। उन्होंने लगातार समाज के वंचितों के लिए काम किया। समाचार पत्र निकाले। समाज-राष्ट्र की समस्याओं के समाधान को अपने जीवन का मिशन बनाया। बड़े राजनेता बने। पत्रकार बने ।अधिकारी बने। ऐसे युवाओं की बड़ी संख्या है कि वह पहले प्रशासनिक अधिकारी बने। बाद में सीधे राजनीति में कूदे । कुछ को सरकारों ने ही पुरस्कृत किया। कुछ आजीवन संघर्षरत रहे। सरकारों ने युवा नीति को लेकर अब तक क्या किया, यह भी समझना आवश्यक है।

भारत में पहली बार युवानीति सन् 1988 में संसद के दोनों सदनों में रखी गई। युवा मामलों और खेल विभाग को इसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सौंपी गई। उद्देश्य था कि युवा नीति उनके व्यक्तित्व व कार्य क्षमता को मजबूत बनाए। वर्ष 2003में फिर युवा राष्ट्रनीति पर चर्चा हुई। 2003 में 13 से 35 वर्ष के आयु के व्यक्ति को युवा के रूप में परिभाषित किया गया। वर्ष 2014 में भाजपा सरकार ने युवाओं के समग्र विकास की वचनबद्धता दोहराई। वर्ष 2023 मे केंद्र सरकार ने युवाओं को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए कहा कि यह शिक्षा व्यावसायिक कौशल सिखाती है।समग्र विकास में सहायक है। इस नीति का उद्देश्य युवाओं को आत्मविश्वास से मजबूत करना है। उन्हें आर्थिक मजबूती देनी है और उन्हें शारीरिक और मानसिक स्तर पर सबल बनाना है। उनका समग्र विकास करना है। युवा नेतृत्व एवं विकास स्वास्थ्य, फिटनेस और खेल आदि के विषय वर्ष 2023 से 2032 का मसौदा है और यह मसौदा वर्तमान में युवा मामले और खेल मंत्रालय के अधीन विचाराधीन है। केंद्र सरकार ने मसौदा नीति पर सुझाव मांगे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की दृष्टि में युवावस्था को सामान्यत: परिवर्तन के तौर पर माना जाता है। युवा वयस्कता की सामाजिक कसौटियों, रोजगार, परिवार और एक उत्पादक नागरिक के रूप में प्रयास कर रहे हैं। युवा परिवर्तन के प्रतिनिधि हैं। युवा शब्द के लिए अंग्रेजी में एक शब्द है जियोंग। इसका अर्थ युवा, युवक नया है, वहीं संस्कृत का शब्द युवान है। इसका अर्थ युवा-युवक है। भारतीय राजनीति को महात्मा गांधी, डॉ. राम मनोहर लोहिया और अंबेडकर तीनों नेताओं ने सबसे अधिक प्रभावित किया है। तीनों महापुरुषों की भिन्न-भिन्न विचारधारा चलीं। युवा गांधी दक्षिण अफ्रीका में प्रिटोरिया से डरबन जाते समय रेल में रंगभेद का शिकार हुए। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपिनियन अखबार निकाला । भारतीयों की ज्वलंत समस्याओं को उठाया। पूरी दुनिया में रंगभेद के विरुद्ध वातावरण बनाने में जुटे रहे। गांधी भारत आए। भारत में अंग्रेजी सत्ता की गुलामी के विरुद्ध बिगुल फूंका । लाखों नौजवान उनके साथ खड़े हो गए । लड़ाई बढ़ गई । फिर आंदोलन का दौर चला।

गांधी के आह्वान पर जिस तरह भारतीय नौजवान छात्र जुटे ऐसा विश्व इतिहास में परतंत्र भारत में पहली बार था। गांधी बैरिस्टर से महात्मा होने की यात्रा पर चल पड़े । नमक आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, दांडी मार्च, जैसे बड़े आन्दोलन खड़े कर दिखाये। इस सब के पीछे युवा शक्ति थी। वह युवा शक्ति अपने राष्ट्र के लिए जागृत हो चुकी थी। आज कोई कुछ भी कहे मगर बैरिस्टर से गांधी महात्मा की यात्रा युवाओं के कारण अद्भुत अकल्पनीय बनी। वह युवाओं के साथ दुनिया के प्रेरणास्रोत रहेंगे। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने पहले भारत में पढ़ाई की । विदेश से पढ़ाई पूरी कर लौटे तो उन्हें भारतीय समाज में ऊंच-नीच की सड़ी-गली व्यवस्था ने झकझोर दिया। वह बचपन में अपने गांव से लेकर पूरे भारत में जातियों से बंटे समाज को निहार रहे थे । वह इस व्यवस्था से जूझ गए। लोगों से कहा कि शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो यह मंत्र किसी समाज के लिए शुभदायक ही है । डॉ. आंबेडकर के विचार प्रतिपल छात्रों युवाओं को प्रभावित करने वाले हैं। स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा का गठन हुआ। संविधान सभा की मसौदा समिति के अध्यक्ष बने।

स्वामी विवेकानंद भी युवा थे । नरेंद्र से स्वामी विवेकानंद की यात्रा रामकृष्ण परमहंस के मिलन से आरंभ हुई। वह भारत की संस्कृति को विश्व में स्थापित करने का स्वप्न लेकर अमेरिका गए। साथ ही अनेक देशों की यात्राएं इसी उद्देश्य से कीं। वहां अपनी भारत की वैदिक सांस्कृतिक अनुभूति को पूरे विश्व के सामने रखा। अरविन्द घोष भी युवा थे। उन्होंने भी भारतीय स्वाधीनता, योग और संस्कृति के लिए विलक्षण काम किया। सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, खुदीराम बोस, गणेश शंकर विद्यार्थी, राजगुरु, युवा ही थे । स्वतंत्रता के लिए इन्हीं सबसे प्रेरित ज्वलंत युवाओं ने अपने देश के लिए बलिदान किया। भारत के हजारों युवा विदेश यात्राओं में रहते हैं मगर वह नौकरी के लिए ही विदेश जाते हैं। कुछ युवा पर्यटन और मस्ती के लिए जाते हैं। भारतीय युवाओं का विदेश नौकरी करने जाने का कारण है राष्ट्र का कृषि प्रधान और संयुक्त परिवार वाला ढांचा का दरक जाना। भारत में बाजारवाद युवाओं को यह समझाने में सफल रहा कि मकान, कार, आधुनिक सामग्री व्यक्ति को श्रेष्ठ और बड़ा बनाते हैं। कहीं तक बात ठीक भी है। दूसरी तरफ परंपराएं हैं। वह क्षीण हो रही हैं। वह अब बासी हो चुकी हैं। परंपराएं युवाओं को अब नहीं रोक पा रही हैं। पहले भी तर्क थे। एक पीढ़ी से दूसरी के बीच के समय अंतराल के । आधुनिकता के नाम पर सारे बंधन युवा तोड़ रहे हैं। आधुनिकता के सामने परंपराओं की दृष्टि चौंधिया गई हैं। संस्कृति और परम्परा दोनों अलग-अलग होते हैं। जीवन प्रतिमान बदल गए हैं। अब बाजार ही हमारी जीवन शैली का अधिकांश भाग तय करती है। युवा बाजार की चपेट में है। आज युवा क्या कर रहा है? राजनीतिक भागीदारी कितनी है? युवा प्रश्न नहीं उठा रहा ? जिन राष्ट्र-समाजों के युवा प्रश्नों से विरत हैं उनका नेतृत्व कैसा होगा? यह अपने आप में बड़ा सवाल है। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए युवाओं को ही आगे आना होगा, तभी राष्ट्र और समाज का कल्याण होगा।

कोडाइकनाल सौर वैधशाला में सूर्य के अध्ययन के 125 वर्ष पूरे

मुकुंद

कोडाइकनाल सौर वेधशाला ने सूर्य के अध्ययन के 125 वर्ष पूरे कर लिए। इसका उत्सव (वर्षगांठ) पहली अप्रैल को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के स्वायत्त संस्थान भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान ने मनाया। इस दौरान कोडाइकनाल सौर वेधशाला के इतिहास का स्मरण किया गया। वैज्ञानिकों का अभिनंदन कर इसकी विरासत का सम्मान किया गया। कोडाइकनाल सौर वेधशाला देश में खगोल विज्ञान के लिए प्रमुख और बड़ी उपलब्धि है। इस वेधशाला में 20वीं सदी की शुरुआत से हर दिन रिकॉर्ड की जाने वाली 1.2 लाख डिजिटल सौर छवियों और सूर्य की हजारों अन्य छवियों का एक डिजिटल भंडार उपलब्ध है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष और भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की अधिशासी परिषद के अध्यक्ष एएस किरण कुमार ने कोडाइकनाल सौर वेधशाला की 125वीं वर्षगांठ के प्रतीक चिह्न का अनावरण और एक पुस्तिका का विमोचन भी किया। इस वेधशाला की स्थापना पहली अप्रैल 1899 को अंग्रेजों ने की थी। खुशी की बात यह है कि वेधशाला के पास दुनिया में सूर्य के सबसे लंबे समय तक के निरंतर दैनिक रिकॉर्ड के अद्वितीय डेटाबेस को डिजिटल कर दिया गया है। यह डेटाबेस अब दुनिया भर के खगोलविदों के लिए सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। कोडाइकनाल सौर वेधशाला वर्तमान में भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान के अंतर्गत फील्ड स्टेशन के रूप में कार्यरत है। यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का स्वायत्त संस्थान है।

उत्सव में भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की निदेशक प्रो. अन्नपूर्णी सुब्रमण्यम ने वेधशाला की विरासत पर चर्चा की। संस्थान के पूर्व निदेशक और सौर भौतिक विज्ञानी प्रो. सिराज हसन ने वर्ष 1909 में वेधशाला में गैस के रेडियल प्रवाह के कारण सनस्पॉट में देखे गए एवरशेड प्रभाव की खोज की जानकारी दी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम कार्यालय की पूर्व निदेशक एस. सीता ने रेखांकित किया कि विद्यार्थियों के बीच इसकी विशिष्टता के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए विद्यालयों और महाविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में कोडाइकनाल सौर वेधशाला पर सामग्री होनी चाहिए।

एएस किरण कुमार ने इस अवसर पर 'भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम' पर चर्चा की। सफल चंद्रयान-3 मिशन के लिए दूर की गई तकनीकी चुनौतियों और गगनयान के साथ भविष्य पर प्रकाश डालते हुए रिमोट सेंसिंग, मैपिंग और संचार के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि यह आयोजन इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कोडाइकनाल सौर वेधशाला में वैज्ञानिक भारतीय धरती से सूर्य को समझने, ग्रहणों का अध्ययन करने, वर्ष 1868 में हीलियम की खोज करने, सूर्य में प्लाज्मा प्रक्रिया को समझने और इसके विस्तार, प्रमुखता और चमक-दमक को समझने का प्रमाण है। कोडाइकनाल सौर वेधशाला तमिलनाडु में पश्चिमी घाट के ऊंचे देवदार के पेड़ों के बीच स्थित है। यह एक हिल स्टेशन भी है। कोडाइकनाल में कॉफी, यूकेलिप्टस और चॉकलेट की खुशबू आती है। यह दुनिया की हलचल से दूर पलानी पहाड़ियों में बसा हुआ है और इसे 'जंगल का उपहार' कहा जाता है। इसकी सुंदर और घुमावदार सड़कें इलाके के भू-भाग और भू-विज्ञान की प्रतिक्रिया हैं। यहां की कोडाई झील ऊंची पहाड़ियों से तारे की तरह टिमटिमाती है। कोडाइकनाल के मुख्य शहर से चार किलोमीटर दूर यह वेधशाला 2343 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इससे पहले यह गतिविधियां मद्रास वेधशाला से संचालित होती थीं। मद्रास वेधशाला को वर्ष 1786 में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी विलियम पेट्री ने शुरू किया था। प्रोफेसर चार्ल्स मिक्सी स्मिथ ने कोडाइकनाल सौर वेधशाला की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सौर विज्ञानी कहते हैं कि आने वाले समय में हमारे अपने अस्तित्व के लिए सूर्य के भविष्य को समझना महत्वपूर्ण है । इस अर्थ में, पिछली शताब्दी में किए गए सूर्य के अवलोकन हमें अतीत में झांकने की अनुमति देते हैं । ये ऐतिहासिक अवलोकन हमें अपने निकटतम तारे के पहले चरण में उसके व्यवहार को समझने में सक्षम कर सकते हैं और उसके आधार पर ही हम उसके भविष्य की भविष्यवाणी कर सकते हैं। सूर्य की नियति को समझने से अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए हमारी योजनाओं को आकार मिलेगा, क्योंकि सूर्य हमारे अंतरिक्ष मौसम की स्थिति के लिए चालक है। और भी वेधशाला हैं देश में: मध्य प्रदेश के उज्जैन ने भी खगोल विज्ञान के क्षेत्र में काफी महत्व का स्थान प्राप्त किया है। सूर्य सिद्धान्त और पंच सिद्धान्त जैसे महान ग्रंथ उज्जैन में लिखे गए हैं। भारतीय खगोलविदों के अनुसार, कर्क रेखा को उज्जैन से गुजरना चाहिए, यह हिंदू भूगोलवेत्ताओं के देशांतर का पहला मध्याह्न काल भी है। लगभग चौथी शताब्दी ई.पू. उज्जैन ने भारत के ग्रीनविच होने की प्रतिष्ठा का आनंद लिया। यहां वेधशाला का निर्माण जयपुर के महाराजा सवाई राजा जयसिंह ने 1719 में किया था। तब वे दिल्ली के राजा मोहम्मद शाह के शासनकाल में मालवा के राज्यपाल के रूप में उज्जैन में थे। राजा जयसिंह असाधारण रूप से एक विद्वान थे। उन्होंने उस समय फारसी और अरबी भाषाओं में उपलब्ध एस्टर-गणित पर पुस्तकों का अध्ययन किया। उन्होंने खुद खगोल विज्ञान पर किताबें लिखीं। राजा जयसिंह ने के अलावा जयपुर, दिल्ली, मथुरा और वाराणसी में वेधशालाओं का निर्माण कराया। राजा जयसिंह ने अपने कौशल को नियोजित करने वाली इन वेधशालाओं में नए यंत्र स्थापित किए। उन्होंने उज्जैन में आठ वर्षों तक स्वयं ग्रहों की गतिविधियों का अवलोकन करके कई मुख्य खगोल-गणितीय उपकरणों में परिवर्तन किया।

आजकल

युद्ध विराम पर भारत का प्रयास

भारत के रूस और यूक्रेन दोनों से मधुर संबंध हैं। भारत सदा से शांति का पक्षधर रहा है, इसलिए जैसे ही दोनों देशों के बीच संघर्ष शुरू हुआ, उसने इसे रोकने की हर कोशिश की।

यूक्रेन ने रूस के साथ चल रहे संघर्ष पर विराम लगाने के लिए भारत के सुझाए शांति फार्मूले पर भरोसा जताया है। इन दिनों यूक्रेन के विदेशमंत्री भारत की यात्रा पर हैं और उन्होंने भारतीय विदेशमंत्री के साथ बातचीत में द्विपक्षीय सहयोग और समग्र संबंधों को मजबूत बनाने की प्रतिबद्धता दोहराई। रूस-यूक्रेन संघर्ष को दो वर्ष से अधिक समय हो गया, मगर तमाम प्रयासों के बावजूद उस पर रोक नहीं लग सकी है। किसी न किसी बहाने, कुछ-कुछ अंतराल पर रूस हमले तेज कर देता है। वह दो बार परमाणु अस्त्रों के इस्तेमाल की धमकी भी दे चुका है। हालांकि यूक्रेन शुरू से रूस के साथ बातचीत की इच्छा जाहिर करता रहा है, मगर रूस की शर्त है कि यूक्रेन नाटो की अपनी सदस्यता वापस ले ले, तभी कोई बातचीत हो सकती है। इस मामले में भारत ने भी कई बार दोनों देशों के राष्ट्रपतियों से प्रत्यक्ष रूप से और फोन पर बातचीत की है। यूक्रेन शुरू से भारत के शांति फार्मूले पर अमल के पक्ष में रहा है, पर रूस अपने रुख में किसी तरह का लचीलापन नहीं दिखाता, इसलिए संघर्ष विराम की कोई सूरत नहीं निकल पाई है।

भारत के रूस और यूक्रेन दोनों से मधुर संबंध हैं। रूसी राष्ट्रपति ने शंघाई शिखर सम्मेलन के दौरान भी हमारे प्रधानमंत्री को आश्वस्त किया था कि वे यूक्रेन पर हमले रोकेंगे, मगर वहां से वापस लौट कर उन्होंने हमले और तेज कर दिए थे। रूस अब तक यूक्रेन के बड़े हिस्से पर कब्जा कर चुका है। वहां भारी तबाही हुई है। दस लाख से ऊपर लोग निर्वासित हो चुके हैं और करीब इतने ही लोग अपनी ही जमीन पर एक तरह से यातना शिविर में रहने को अभिशप्त हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी इस तबाही को रोकने की कोशिश की, मगर उसे कामयाबी नहीं मिल सकी। दुनिया के तमाम देशों को लगता है कि अगर भारत मध्यस्थता करे, तो इसका हल निकल सकता है। मगर अड़चन रूस की तरफ से आ खड़ी होती है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन बातचीत में तो ऐसा जाहिर करते हैं कि वे यूक्रेन पर हमले रोकने को तैयार हैं, मगर व्यवहार में ऐसा कुछ भी करते नजर नहीं आते। दरअसल, यूक्रेन पहले रूस का ही हिस्सा हुआ करता था, पर अलग होकर स्वतंत्र देश बन गया था।

जीएसटी संग्रहण का वास्तविक लाभ - आम जनता के हाथ में धन

लोकेश भारतीय

जीएसटी के राजनैतिक इतिहास में कई बार अपने जीएसटी के अलग-अलग नाम सुने होंगे। कोई इसे गब्बर सिंग टैक्स, तो कोई गोदी सर्विस टैक्स कहता है। लेकिन जीएसटी संग्रहण से सम्बंधित जो खबरे लगातार आ रही है उसने मुझे प्रभावित किया की आप तक सही और साधारण भाषा में जानकारी साझा की जाये। जिससे आप समझ सके कि जीएसटी 'एक फायदे का सौदा है या केवल एक मास्टरस्ट्रोक'। दरसअल जीएसटी अर्थात वस्तुएवं सेवा कर संग्रह लगातार बढ़ाता जा रहा है। वित्त वर्ष 2023-24 खत्म होने वाला है और संकेत मिले हैं कि देश में जीएसटी संग्रह लगभग 12 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि के साथ 20 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर जाएगा। पर इन सब से आपको और मुझे क्या फ़ायदा? देखिये अर्थवयवस्था बहुत ही साधारण सिद्धांत पर कार्य करती है यह सिद्धांत है एक हाथ दे और दूसरे हाथ ले। अर्थात यदि जीएसटी संग्रहण बढ़ाता है तो इसका सीधा फ़ायदा देश की आम जनता को मिलेगा। जीएसटी से संगृहीत राशि को सरकार बहुत से कल्याणकारी योजनाओ में लगाती है जिसमे महिलाओ का स्वास्थ, बच्चो की शिक्षा, अधोसंरचना के कार्य आदि शामिल होते है। ऐसे में जीएसटी में बढ़ोतरी देश की आर्थिक गतिविधियां में निश्चित रूप से तेज़ी लाएगी। जिसका परिणाम अधिक उत्पादन, अधिक रोजगार, अधिक मांग, अधिक मुनाफा होगा। आम जनता के हाथो में पैसा होगा जिसे वह बाजार में खर्च कर अर्थवयवस्था को मजबूती प्रदान कर सकेंगे। यही नहीं इसका एक फ़ायदा विज्ञानं-प्रौद्योगिकी क्षेत्र को भी मिलेगा। बजट आवंटन की राशि बढ़ेगी, जिससे देश का विज्ञानं - प्रौद्योगिकी क्षेत्र और अधिक सुचारु रूप से कार्य कर पायेगा।

जीएसटी अधिकारियों ने यह भी संकेत दिया है कि 2023-24 की अवधि में जीएसटी उपकर (जीईएसएस) को भी मजबूत संग्रहण स्थिति में लाया जायेगा। इसके तहत कुल राजस्व 1.45 लाख करोड़ रुपये होने की संभावना है। केंद्र सरकार ने राज्यों को मुआवजा देने के लिए जुटाए गए 2.69 लाख करोड़ रुपये के कर्ज को चुकाने के लिए विलासिता की वस्तुओं और ऑटोमोबाइल, शराब, सिगरेट आदि कई वस्तुओं पर जीएसटी उपकर को 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया है। जीएसटी और उपकर, दोनों के संग्रह में तेजी सूचक है कि अर्थव्यवस्था सुधार की राह पर है। यह समझने की बात है कि वित्त वर्ष 2019-20 में कुल जीएसटी संग्रह 10 लाख, 18 हजार करोड़ से ज्यादा रहा था। उसके बाद वित्त वर्ष 2020-21 में महामारी ने अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया और कर संग्रह दस लाख करोड़ रुपये के नीचे चला गया था। हालांकि, उसके बाद से जीएसटी संग्रह लगातार बढ़ा ही है। यदि समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के फरवरी माह को देखे तो संग्रह करीब 17 लाख करोड़ रुपये के आसपास पहुंच गया है। चूंकि मार्च के महीने में बाकी महीनों की तुलना में कुछ ज्यादा संग्रह की संभावना रहती है। इसलिए अगर कुल संग्रह 20 लाख करोड़ रुपये के आसपास पहुंच जाए, तो किसी को हैरानी नहीं होना चाहिए।

पिछले वित्तीय वर्ष में जीएसटी संग्रह 18 लाख करोड़ रुपये से थोड़ा अधिक था। मार्च 2024 के लिए जीएसटी संग्रह के आंकड़े 1 अप्रैल को आने की उम्मीद है और अगर संग्रह रिकॉर्ड तोड़ हुआ, तो निश्चित ही इससे देश के आर्थिक परिवेश में नए उत्साह का संचार होगा। इस तथ्य को कोई भोला व्यक्ति भी समझ सकता है कि बेहतर कर संग्रह सकारात्मकता का सूचक है, जबकि कर संग्रह का घटना नकारात्मकता का सूचक होता है लेकिन बढ़ते कर संग्रह के बावजूद भारत में चुनौतियां कम नहीं हैं। अभी भी जरूरत से ज्यादा औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद ही एक व्यवसाय अपने पांव पसारना शुरू करता है, इसलिए देश में व्यवसाय की संरचना को आसान बनाने की जरूरत है। हालांकि, एक सकारात्मक पहलू यह है कि चुनौतियों के बावजूद भारत में नई कंपनियों का उभरना थम नहीं रहा है। सरकार उदारता से ऋण दे रही है, शेयर बाजार में भी दुनिया भर से निवेश आ रहा है, इसके बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी क्षमता से कुछ कम ही गति से अग्रसर है। भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीयों को चेतावनी या नसीहत देने वाले भी कम नहीं हैं। इसकी एक बड़ी वजह देश पर बढ़ रहा ऋण भी है। जीएसटी संग्रह का सही लाभ तभी है, जब देश के जीडीपी में ऋण का अनुपात समय के साथ घटता चला जाए। साधारण शब्दों में हमारा उधार काम हो जाए। हम अपने ही धन से विकास करने में सक्षम हो जाए।हमें इस बात पर विचार करना होगा की कर के साथ यदि उधार भी निरंतर बढ़ रही है तो यह चिंता का विषय है और विचारणीय है। आम जनता के हाथ में धन जीएसटी संग्रहण का वास्तविक लाभ हो सकता है।